॥ श्रीमतेरामानन्दायनमः ॥

श्रीअयोध्या कनक भवन दरबार श्रीलालसाहेब निवासी

अनन्त श्रीयुक्त स्वामी

श्रीशीलमणिजी महाराज

रचित

विवेक गुच्छा

जिसको

उक्त श्रीस्वामीजी महाराज के प्रशिष्य

स्वामी श्री १०८ परमहंस श्री रामदासजी

महाराज ने

श्रीमान् ठाकुर साहब संग्रामसिंहजी ठि० ड़िग्गी की सहायता से

प्रेमप्रकाश मुद्रणालय जयपुर में

छपवा कर प्रकाशित किया

१००० } प्रथमवार { सं० १९९१

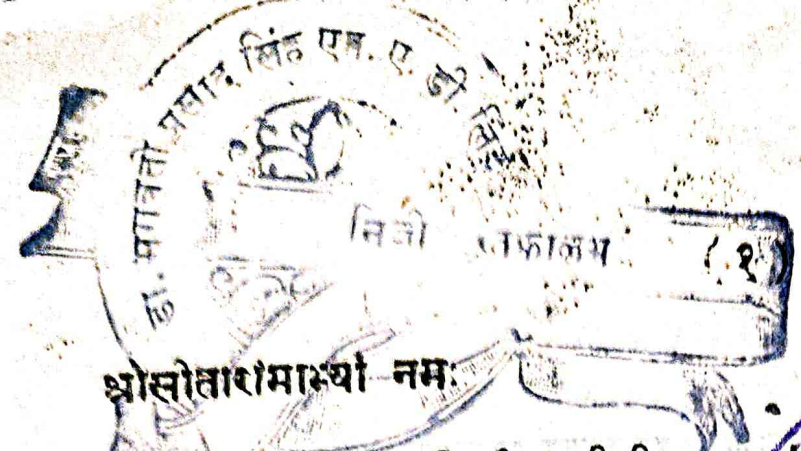

श्रीसीतारामाभ्यां नमः

श्री अयोध्या कनक भवन निवासी श्री स्वामी शीलमणीजी महाराज

विवेक गुच्छा

दोहा

श्रीरामानँद रामतन, तम नाशन मम प्राण।
करुणा जन पर प्रेमभर, शीलमणीरस जान॥
तन मनते रघुबीर पद, जिनकी प्रीति पुनीत।
तिन को कंठ लगाइये, शील मणी यह नीत॥
कंठी युगल सुकंठ में, मंत्र राज धनुबाण।
ते सज्जन को राखिये, कंठमें कंठ समान॥
सर्व देवमें राम लख, सर्व वेदमें राम।
सर्व तत्वमें जासुकी, सत्ता लसत ललाम॥
सर्व भोगमें रामकी, सत्ता सरसत स्वाद।
तासु बिना सब वेदकह, नरपुर सुर पुर बाद॥
सर्व ज्ञानमय रामछबि, सर्व मंत्र मय अंग।
सर्व भक्ति मय शीलमणि, रस मय सख्य उमंग॥

सर्व रंग मय श्याम शुचि, तन घन बरसत रंग।
मोद विनोद प्रमोदमय, पीत नवीन सुअंग ॥
सर्व सिन्धु मय राम को, गुण गम्भीर सुहात।
तीरथ पति पावन मई, निरखत सुमति बिकात ॥
सर्व यज्ञ मय राम को, सत्यासत्य सु नाम।
करहु भवण शुभनेमसे, नित्य सुमंगल धाम ॥
बरसत वरण विवेक मय, वर दायक श्रुतिसार।
शीलमणी हिय में धरो, वर्ण मकार रकार ॥
षट मात्रा मय वर्ण दोउ, वरणत वेद पुराण।
ऋतु सरबस वैभव साहित, शीलमणी मन मान ॥
शीत ऊष्णसु प्रकाश मय, लसत रकार मकर।
ग्रीषम हिम मय ऋतु सबै, शीलमणी सुविचार ॥
चार मास भर शीतरुचि, चार ऊष्ण मय भास।
चार सामिलित शील मणी, सितल ऊष्ण प्रकास ॥
युगल वरन शशिरवि आगन, कारण मंत्र विवेक।
धारण ऋतु कर कीजिये, शीलमणि लखि टेक ॥

षट सेवा रह मास बनि, दिन गनि सातसु तात।
कृष्ण शुक्ल दोय भेदसे, शीलमणी तिथिजात ॥
राम बीजसब जगत को, जगत सकल तिहुँ माँहिं।
ऋतु बैभव रस पांच में, शीलमणी बहु धाँहिं ॥
षट रस नवरस देखिये, पंच रंग मय भोग।
विविध रंग बनि पंचसे, शील मणी संयोग ॥
पंच मात्रा ज्ञान मय, इन्द्रिय पंच बखान।
इंन्द्रिय विषय अनेक पुनि, शीलमणी रस खान॥
सीताराम अराम थल, सरजू विपिन प्रमोद।
शील मनी सब याम में, सीताराम विनोद ॥
समै समै ऋतु नाममय, भोग शयन सुख ऐन।
नयन मिलाये लालसे, शील मणी कर चैन ॥
अष्ट समय रितु दिन मिले, तिथ जस राग विहार।
दम्पति संग सनेह भर, शील मणी इक तार ॥
जेहि रस में सुख पाइये, सो रस रसिकन संग।
वृन्द वृन्द सब ठौर में, शील मणी भर अंग ॥

जेहि विनोद में देखिये , दम्पति केलि अनूप।
शील मणी सो मंडली , रसिया जाके भूप ॥
रसिया भूप किशोर तन, रसियन के सँग राग।
रस मय बात जुरैन दिन, शीलमणी लखु भाग॥
रास मंडली अवध में , रसिक मंडली राग।
भूप मंडली शील मणि , देखव भाग सुहाग ॥
ये रस यहि तन में मिलै, रसिक मंडली माँह।
शील मणी धन मानिये , अति शय मोद उछाह।
ये रस रसिकन बिन कहाँ, देखो रसिक सुजान ।
शील मणी अति शय भरो , सरयू तीर सु थान॥
सरयू पुलिन सु चन्द्रमा, रमक चमक चहुँ ओर।
लसित तरंग सु शील मणी, मिलित चन्द्र सुकि शोर ॥
चन्द्र अडोल अमोल छबि , चन्द्रानन सिय बाल।
चन्द्र अली चन्द्रावती , शीलमणी शशि माल ॥
मिथिला अवध विनोद थल, निरखत हरखहु हीय ।
शील मणी जहँ मंडली , रसिकन केर सुजीय ॥

निमि कुल नान्दिनि लाडली, रघु कुल नन्दन लाल ।
शील मणी रस कुंज में , रसिकन संग रसाल ॥
जग खग सम डग मगसदा रग वगले सो नाहिं ।
याते मिथिला अवध थल शील मणी दृग चाहिं॥
जे रस मुक्ता को चुगै , दंपति संपति ताल ।
शील मणी सो बसत है, सरयू तीर मराल ॥
ते हंसन के संग में, दंपति करत विहार ।
शील मणी सुखमा भरे, रहत भये गर हार ॥
हे सुंदरि सुंदर लखो, सुंदरि के गल वाह ।
सुंदर विपिन प्रमोद में, शील मणी द्रम छाह ॥
जाहि रसिकन को तरासिये, सो रसिकन की खान ।
सरयू तीर सु शीलमणि, वृंद वृंद उर भान ॥
सरयू पुलिन सुचंन्द्रमा रमकझमक चहुं ओर ।
ललित तरंग सुशील मणि, मिलित सुचन्द्र किसोर ॥
चंदसभा चंदन रचित, चंद वितान प्रकास ।
चंद मुखीचद्द शीलमणि, गयुल चंद के पास ॥

चन्द कुंज चन्द्रावली, शोभित चन्ददे वाल ।
चन्द खम्म थल शीलमणि, चन्द्र बिछाये वोल॥
चन्द्रकला चन्द्राननी, चंद्र मुखी छवि मान ।
चन्द्र मोहनी शील मणि, चन्द्र प्रभा सुख दान॥
चन्द्र वती चन्द्रावली चन्द्रा सुखमा खान ।
शील मणी हियमें बसी दम्पति मृदु सुसकान ॥
चन्द्र केलि सिव बालकी, चन्द्र महल के माहि।
चन्दन चर्चित चन्द्र आल, शील मणी चहुंधाहि॥
जेहि रस में सुख पाईये, सो रस रसिकन संग ।
सरजु विपिन प्रबोदमें, शील मणी नव रंग ॥
जेहिदिन भेंटा माधुरी, रसिकन संग किलोल।
गोल अमोल कपोल में शील मणी चित डोल।
रसिया चितरस चाखिहै, रसिया राजिव नैन।
रसिया रसिक सुशील मणि, लखिया दम्पतिचैन ॥
तजिया जग भजिया सदा, रसिकन जूठन भोग।
सीताराम विनोद में, शील मणी नित योग ॥

राम मंडली अवध में , रसिक मंडली रंग ।
रस में बात जुहाँस रस ; शीलमणी नित संग ॥
चाह छकीली वैन कह ; आह वियोग विचार ।
दाह रैन दिन मिलन की; शीलमणी सुनु य्यार॥
फूले फूल गुलाब के; चटकीलो बर बाग ।
फाग गुलाबी मंडली; शीलमणी बढ़ राग ॥
फाग गुलाबी गुल मली; बिछे गुलाब सहाय ।
छूटे लूटे रसिक रस; शीलमणी सब आंव ॥
झरफ गुलाबी कुंजमें; फूल गुलाब अपार ।
छूटत फुहार गुलाबके; शीलमणी सबद्वार ॥
विहरै कुंज गुलाबके; दम्पतिफूले तूल ।
खड़ी गुलाबोंसी अली; शीलमणीचहुँ कूल ॥
दुरत दुरायेना अली; लगे यनन के बान ।
दुरी लाज सब तोरिकै, शीलमणी कर यान ॥
नयन नोक कसकत हिय; हूल कटारी कोर ।
शीलमणी अँग अँगाविध्यो; निकस करेजे फोर ॥

छन घूमत बिहँसत फिरे, मरे जिये मुरझाय।
शीलमणी लखि नैन मद, पिय दसा कस हाथ॥
नैन मैन करवाल सी, बाँधी सुन्दर राम।
करत कतल छन छन अली, परिन पलक पर वाम॥
मत कीजै दृग ओट जू, चोट लगे उर आय।
हाय उठे बैठे परे, सील मनी उरझाय॥
मति जोरे दृग काहु से, जुरे गजब होजाय।
शीलमणी फिरना जुरै, कठिन नैन के भाय॥
छन छन चाहत मधुरी, परम सनेही मीत।
शीलमणी यह आतुरी, सकल चातुरी बीत॥
रहत सँभारत चित्त को, समरत नाहीं मीत।
शीलमणी मतदीजिये, दरस दरद भर नीत॥
सखा छबीले लाडिले, छैल फैल छल छाप।
छिपेरहतहो साँवरे, सील मनी मन चाय॥
दरद उठत बैठत दरद, दरदै में दिन जाय।
दिल वर दम दम दरद दियो, शीलमणी नजराय॥

गड़ी कलेजे घावक, अलकैं नागिनि आया।
शीलमणी छलकै वनी, देखे विष चढ़ जाय ॥
आग लगे वन जर गये, उड़गई राख अकस।
शीलमणीतरु लतन की, गये मजे सुख वास ॥
रहत संभारत चित्त को, सनरत नाहीं नीत।
हाय दैव कैसी भई, गई अनोखी रीत ॥
तुम्हरीसकल सुरीत कौ, हम जानत मम जान।
सब दिन ऐसो ना रहै, समुझौ जीवन प्रान ॥
पूछी सब की रीति है, बीत गये दिन चार।
हानि लाभ सुख दुख मई विधि करतूत निहार ॥
सबदिन सुख दुख नारहै, समुझो तुम हरि जान।
बाल वृद्ध वा जुवा वह देखो जात जहान ॥
वृद्ध भये तन आपनो, भारी होत सुजान।
शीलमणी तहँ नेह गुरु, परत ओर के कान ॥
येही नेह निवाहियो, समै जान वो होय।
सील मली तब नेह घर, तन मन एकस जोय ॥

मित्र सदा हित की कहे, चहे न अनाहित मित्र ।
शीलमणी समुझे बनै, कहनि रहनि जसचित्र॥

श्यम सघन घन घुमड़ घन, घटा छटा श्रीराम ।
तन शृंगार सुशीलमणी सिय सुदरि दामिनि वाम ॥

हरित लतान वितान तन अवनि हरित छविवान।
सख्य रसोल्ल सशीलमणी, लह लह लही सुतान॥

फूले सेतसु फूल तन, मुक्ता नख धुति धार ।
दास्य रसोल्ल स शीलमणी, सेत फरस पद चार ॥

स्वच्छ महल जश जग मगो तन पुर सुख साँत।
विसद वैभव अनुभव करत, शीलमणी रस दाँत ॥

पीत पुनीत सु अंग बर, पीताम्बर सुख देत ।
मनहुँ अंक भर शीलमणी, वत्सल रस हित तेत ॥

कल कपोल पै अलकैं, झल कैं स्याह रसाल ।
शीलमणी हिय बीचमें, बसति सो नवल बिसाल ॥

चंद वदन सुखमा सदन, जनकलली रघुचंद ।
शीलमणी उर कंजमें, विलसत छविभर कंद॥

चंचल चख कर चित छली, छली बली रघुराज ।
शीलमणी सुधि बुधि रुवै, भुलि गये जग काज॥
लाल राम रस में भरे, करत अट पटे ख्याल ।
शीलमणी नव नेह घर, नई जिवानी हाल ॥
रस माते गते लसे, नैन बैन रघुलाल ।
शीलमणी लखि माधुरी, वसत नई नइ बाल॥
अलकैं झलक कपोल पै, चिकनारी घुँघुरार ।
शीलमणी शिशु नागिनी, करत कलोला सिंगार॥
रघुनन्दन रस बाड़ले, जनक सुता गरहार ।
शीलमणी घन दामिनि, मनो मनोज विहार ॥
हँसनि लसनि मुख चंदकी, दंत पाँति छविछेया।
शीलमणी रघुलाडिले, रूप राशि सरसाय ॥
रचित केलि मन मेल सुख, संग सहेल अनेक ।
सहचर सखि मधुरेस प्रिय, स्याम गौर लखि एक ॥
अलसाने आकि मद छके , सील मनी मन नैन ।
लपटानें दम्पति पगे , अधर मधुर मुसकैन ॥

जिमि पै नीर नवीन दुति, सील मनी सिय पीव ।
एक रंग नव अंग मे , प्रेम वियूख अतीव ॥
सब रमकनि नव अंग की, शील मणी हिय एक।
छबि प्रवाह जुग मीनदृग , भिन्न होत नहिं नेक॥
भुलनि शूल समूह दुख, किमि बरनों दृग श्याम।
राम श्यामता दृग बनों, गौर वर्ण लखि बाम ॥
मंगल मय कल्याण मय, उत्सव सकल सुजान ।
रूप अली बलि जाइया, शीलमणी मन मान ॥
सान्त पंथ नहिं कल लगत, शुचि विराग मति धीर ।
सदा अमानी मिलन हित, आसा बद्ध गम्भीर ॥
श्री रघुवीर सु नाम धन , गान रैन दिन लीन ।
लीला ललित निबन्ध में , चित असक्त जल मीन ॥
अतिसय प्रीति सु अवध में, उर वात्स अपार ।
निरखत वीथी नगर वर शीलमणी श्रुतिसार ॥
अस लक्षण जहं पाइये ,तहां परम विस्वास ।
राममिलन तनजोग भो, चितमय बुद्धिप्रकास

साधन जब पारिपाक भो, भाव भक्ति तब होत ।
राम कृपासो जानिये, रुचिर विलास निसोत॥
स्वस्ति श्री उत्तम लसै, बसै सिया पिय जान ।
मान सुखद छबि लालकी, कमल नैन मम प्रान॥
चल दल लोचन स्यमके, बाम जानकी मेल ।
भुज अंसन कर कर गहे, लहै माधुरी केल ॥
सुन्दर बन घन नीर शुचि, सरयू सरस गम्भीर ।
नीर तीर बिहरैं सदा, सिया पिया रघुबीर॥
चंप कली सिय लाड़िली, गर हरवा रघचन्द ।
मंद मंद सरजू निकट, विहरत छबि के फन्द॥
सालत उर मम क्रूरता, पोठ कीच भर जाय
सोनहिं समुझत चित्त खल, पीछे पुनि पछिताय॥
सुन्दर मुख की मधुरी, उरझो उरमें आय ॥
जायन उरत चन्द मुख, सुधा सरस मन भाय॥
चंचल भरत गुलाल उर, वरनै गावत फाग ।
राग भरो नव प्यारिके, सील मनी धनि भाग॥

बरषत नीर सुगंध वर अगर अबीर गुलाल ।
पकरत तेहि अँधियार, मेंसील मनी नृप लाल॥
स्वस्ति श्रीसिय सुन्दरी नवल उमंगन फाग ।
सरस केल उर शीलमणी पूरन रंग सुराग ॥
धडकन लागी पीरसे, छतिया मेरी वीर ।
रोरी गुलाल भरे अँग, आये हमरे तीर ॥
कहत छबीली नवल सो पिया मनो हो फकीर ।
गावत राग सो जोगीया, शील मनी सो अधीर ॥
पाय नवल तन सांवरे श्यामा तनउर उरझाय।
रामसिया नव कुजमें मित्र ध्यान उर लाय ॥
शुचि तन शुचि मय संग शुचि शुचि अहार शुचि नैन।
शुचि आसन शुचि देश थल शीलमणी सुख देन।
सुचि विचार निज भावमें सरल प्रकृति शुचि राग ।
सुचि इकान्तनिज भावना सहित पाठ करिलाग।
शील मणी निश्चै तिन्हैं निज अभीष्ठ फलहोय।
शुचि सरिता के तीर में नेम करै दृढ़ जोय ॥

सयन भूमि कर रैन में दिन में सयन न मीत।
भोजन एकै वार नित जावत नेम पुनीत ॥
तावत ब्रह्म सु चर्य कर इंद्रिय वस जन जान।
पय अहार फल कन्द शुचि चाउर मूंग सुधान ॥
गेहूं परवर घृत सुची सकर सु मिश्री खीर।
पावै भोग लगाय के शीलमणी मति धीर ॥
जनक सुता रघुराज को अस्तव राज सु मंत्र।
पाठ करै दृढ़ नेम से पूजन विधि वर जंत्र ॥
अंगन्यास करन्यास नित प्राणायाम विधान।
नाम उचारन ध्यान गुर इष्ट गसिक निज प्रान ॥
जनक लली रघुराज को पूजे यहि विधि जीव।
जीवन मुक्त सो जानिये सील मनी सुअतीव ॥
चतुरि चातुरि वेष छवि रूप छटा सम तूल।
सखी सोइ रस हास लस कल सहाय अतूल ॥
वचन केल रस मेल अंग करै सिखावन चैन।
सोइ सहेली जानिये वस अधिक छवि ऐन ॥

सख्य दास्य कछु लै लसै, सहचारनि सूठि वैन।
सो सहचरि नैनन लसै, सेवै सिय सुख दैन॥
अष्ट पहर पर प्रेम पर, पारायण चित पान।
राम रसायन सील मनी, रामायण गुन गान॥
बिसरी ससुरी दीनता, कसरी इन्द्री ग्राम।
बसरी अवध सुधाम में, शीलमणी सु अराम॥
विसरे विष सम बिषय सब, पसरे ज्ञान बिराग।
सचसम शूचिसील मनि, उघरे निज अनुराग॥
अज अजग इव अजुव तन, अजर अजित नृप नाम।
शीलमणी अज बशमनि, राम श्याम अभिराम॥
अतिसय पूरन चन्द शत, भरति यियूष स्वरूप।
बिशद सच्चिदानन्द तन, शीलमणी सु अनूप॥
तीन अवस्था वासना, बिषम विपर्यय जान।
संशय बिगत प्रमोद मय, शीलमणी पहिचान॥
पंच कोस त्रै देह से, जीव स्वरूप अनूप।
राम अंस अच्चय अमल, शीलमणी छबि भूप॥

देहतीन से जानिये परे अनूपम देह।
श्याम गौर का अंस सो शीलमणी मय नेह॥
चिद स्वरूप को जानिये, निर्विकार जग पार।
नित्य निरंजन ज्ञान मय, शीलमणी रिझवार॥
शांत निरंतर अजर अज, अविनाशी सुख राश।
शीलमणी सुओंवेत अणु लघु अदय्य प्रकाश॥
निर्मल अरु निर्लेप है देह देह प्रति मान।
स्वयं प्रकाश सु शीलमणी, व्यासशीलगुनमान॥
स्वयं प्रकाश सु दीय से वस्तु जीव हरि अंस।
चिदानन्द तन शीलमणि अवधसिन्धु को हंस॥
निज स्वरूप सम्बन्ध विधि, जाने बिना न नेह।
शीलमणी थिर किमि लहै, भूलो अपनो गेह॥
मंत्र सकल जग जहां लगि, जीव ईश व्यौहार।
माया काया मंत्र मय, शीलमणी सु विचार॥
एक दोय अरु तीन लग, चार पांच षट सात।
शीलमणी बहु चरन मय, मंत्र अनंत सु ख्यात॥

राम रां अरु रां हरि; श्री राम जय राम
जय जय राम सु मंत्र वर; शीलमणी सुखधाम।
श्रीं ह्रीं पर नव सहित, एं ऐं कल संग
राम मंत्र षट भेद वद; शीलमणी श्रुति रंग।
भेद अनंत सुमंत्र ये; वर्ण मिलाये होत।
मंगल मय कल्याण मय; शीलमणी श्रुति सोत।
नाम अनन्त सु राम के; ख्यात लोक में तात।
सो सब मंत्र सु जानिये; शीलमणी उर रात।
मिथिला अवध सु मंत्र मय; रानी नृप परिवार।
भोग विभव सब महल थल; शीलमणी सु विहार॥
मंत्र विलोकनि शीलमणी, अरथ सु हित सम्बन्ध।
परम्परा परमान युत; ध्यान धरम परबन्ध॥
अन्धन संग न कीजिये; भाव भावना बात।
भाव भावना मंत्र से; शीलमणी दरसात॥
अंध धनहि ना पाइ है; गूढ़ मंत्र कर बात।
मंत्र वेद बेदान्त मय; शीलमणी जग ख्यात॥

मंत्र मुनीन्द्र सु जानहीं जस बर वस्तु अनूप ।
नाम राम सीता रमण शील मणी रस भूप ॥
वरणत बड़ नर वस्तु मय, मंत्र राम छविधाम ।
असल अनन्त प्रभाव मय, शील मणी गुण ग्राम ॥
सुन्दर सब संबंध लखु मंत्र विषै अभिराम ।
तजि सब शंक अशंक ह्वै, शील मणी भजु राम ॥
आय नमः सु रां पद, राम अतोल स्वरूप ।
सकल मंत्र मय वेद मय, शील मणी सु अनूप ॥
लखु सम्बंध सुमंत्र से, शान्त दास्य शृंगार ।
वत्सल सख्य सु पंच रस, भाव शीलमणि सार ॥
मंत्र वेद वेदान्त मय, अमल सच्चिदानन्द ।
सकल भाव मय भोग मय, शीलमणी रघुनंद ॥
मंत्र भावना राम मय, राम भावना मंत्र ।
राम मंत्र एकै लखव, शील मणी सो तंत्र ॥
मंत्र भावना भाव मय, विभव महल वन बाग ।
मंत्र से पृथक कछू नहीं, शील मणी लखु लाग ॥
मंत्र दंड चौसठ घडी, तीस पहर वसु राम ।

दिवस सुतिथि ऋतु मास पछ, बरष शीलमणि धाम
मंत्र राव रानी सकल, परिकर दासी दास।
सखी सखा सब मंत्र तन, शील मणी सुख बास॥
अति ही मोहन मोहनी, रूप लह लही बाग।
सरजू तीर विनोद कर, शील मणी भर राग॥
नाम अनन्त अनन्त के, ख्यात लोक श्रुति सार।
सो सब मंत्र अनूप फल, शील मणी उर धार॥
युगल वर्ण घट वस्तु मय बरसी विशद महेश।
महा-रामायन मैं सजन, शीलमणी वर देश॥
दरस परस अवधेस सुत, मनतन अरपन नयन।
निशिदिन सखरस शीलमणी, रघुनन्दन छवि अयन
नृप नन्दन वन्दन रसद, चिन्मय सुखमय अंग।
सदमय सदगुन सदसदा, सेवत भरे सुरंग॥
चतुर चारु आनन लसै, चारु वेष चित चोर।
नव किशोर नव नेह भर, रघुनन्दन रस बोर॥
नैन कंज नेजा बने, सान धरे जे मैन।
पार करेजे लखत ही, होत पैन मुसकैन॥

नख सिख प्रेम पियूखवर, रघुनन्दन छविचन्द ।
सख्य सुधा भीने वदन, लह लहात दृग कंद ॥
मधुर सँख्य मय माधुरी, मनस आतुरी मीन ।
मधुर सखा छवि नीरघन, रघुनन्दन चित लीन ॥
लीन परस्पर सब विधी, नेही भिन्न न होय ।
नीर क्षीर दोय होत हैं, मित्र होत नाहिं दोय ॥
याते श्रुति सिद्धान्त निज, सत्य सख्य पथ पंथ ।
मित्र दृगन से दृग मिले, गात वात मन गंथ ॥
चित निरोध मन एकरस, वस्तु सच्चिदानन्द ।
योग ज्ञानमय देखिये, अंग सख्य को छंद ॥
परम तत्व पर मन लसै, जनक सुता रघुराज ।
साज राज नित अवध वर, शीलमयी शिरताज ॥
अज निरीह अद्वैत जो, गुणातीत वद वेद ।
सो अंगन की छटा है, जानहिं छवि छकि भेद ॥
पीत सुमंगल मोद कर, अति उत्साह कि रेख ।
नील अनन्य सनेह मय, श्याम उन पट पेख ॥
पीत वसन प्रीतम गहो, नील नवेली रंग ।

मंगल मोद अभंग मिलि, छलकत वसन अभंग॥
श्याम अंग नव रंग मय, रघु नंदन चित चोर।
पीत अंग प्यारी सिया, करुणा कलित किशोर॥
सत्य प्रतिज्ञा अंग ही, चढो न दूजो रंग।
तजत शक निःशंक है, लखत श्याम शुभ अंग॥
प्रेम पियूख अगाधता, सुचि उत्सह स्वरुप।
पीत अंग नव रंग मय, निरखत होत अनूप॥
त्रै रस मय दृग देखिये, श्याम श्वेत अरुणार।
मद विह्वल वर वारुणी, छवि गहि गर लगि प्यार॥
दास्य सख्य शृंगार रस, रंग दृगन मद मोद॥
लक्षण औरो लखब रस, शील मणी सु विनोद।
करुणा अद्भुत बीर रस, शान्त हास्यता पेषु॥
रौद्र भयानक भीलषव, शुचि वत्सल मय देषु।
रस मय मूरति सांवरी, द्वादश स्वाद सहेत।
पात्र संग में जानिये, शील मणि सुख षेत॥
शान्त परम एश्वर्य मय, अनुभव अद्भुत रूप।
दास्य सु चरन न में लसै, रघुनन्दन छवि भूप॥

सख्य सुभुज अस्कंध लस, हिय शृंगार सरूप ।
वत्सल मुख सब अंग को, पालकलखौ अनूप ॥
करुना नैन सु राम को, भृकुटि रौद्र बिचार ।
हास्य अधर अद्भुत लखा, चिन्मय रचन अकार ॥
बीर लखब भुज दंड वर, भय विभत्स तद कर्म ।
दुरजन प्रति दरसात है, देखब जग पुनि धर्म ॥
नयन रूप रस में छके, श्रवण सुयश रसलीन ।
बचन रसीली गुण रचन, नचै चरन पर वीन ॥
कर सेवन में रैन दिन, जस सरिता की धार ।
प्यार हार गर आँकि रहै, भिन्न पिरात उधार ॥
शीश जानकी जान पद, नमत नेम नित लीन ।
रसना रसिक उछिष्टि भुक् अतिशय, प्रबल प्रवीन ॥
मंजु सुगंधन में सनी, रसिक नासिका मोर ।
जनकलली रघुराज नित, सौरभ बाग किशोर ॥
तुचपर सत सरसत सदा, अतिशय प्रबल पिआस
बढ़ी रहत दिन रैन उर, जिमि भुखे की आस ॥
भूषन अंगन पहिरिये, नख सिखसाजे सुखदैन ।

सुन्दर सिय रघुराज के, गुन मुद मंगल देन ॥
चित सुमिरन मनलीन छवि, बुद्धि वस्तु परबोध ।
चैतन अचल सुमेरुसम अस निश्चय सुचि सोध ॥
अहं सखा रघुराज को, अहंकार अस नित्य ।
ऐसे रहे सुहीय में, जग सम्बन्ध अनित्य ॥
अहं सखा रघुचन्द को, इहै मंत्र जपु जीह ।
जैसे स्वाती नीर को, निस दिन रटत पपीह ।
श्रवन मनन अति नेम से, नित्य ध्यान इकतार ।
जैसे चन्द्र अमंद का, लखत चकोर कुमार ॥
अस चित चाहत रहत नित, पहराऊं गरमाल ।
निरखत मुख मुसकान मृदु, चितवनि नैन विसाल ।
माला नवधा भक्ति की, रची अमोल सनेह ।
मिलत वेद विधि संत पथ, सद्गुरु कर निज देह ॥
शीलमणी उर त्रास से, प्यारे के गल मेल ।
निरखि माधुरि छकि रहे, प्रेम प्रवाह सकेल ॥
अरचन वन्दन दास्यता, कीर्तन श्रवन सुधार ।
सुमिरन सेवक सख्यता, आत्म निवेदन सार ॥

सिरको फल सिय लाल पद, बन्दन सुफल सुहोय।
बन्दन नहिं फिर ताल फल, शीलमणी लखु सोय॥
नैनन को फल सीयवर, नैनन निरखत नाहिं।
ते मति मंद के बैनजु, शीलमणी सुरझाहिं॥
कानन को फल बोद भर, रामायण श्रुतिसार।
सुने नहीं मति मन्दकर, सब सुख फलित उदार॥
सुघर नासिका जासिके, तुलसी फूल सुँघाव।
शीलमणी तब पाइये, नेह नगर को भाव॥
रसना को फल कीजिये, रटिये सीता राम।
गुणगण जीवन जीह फल शीलमणी अभिराम॥
रुचिर सुअन्न सनेह से, भोग लगावे जौन।
तौन प्रसाद जु पाइये, शीलमणी शुचि मौन॥
और अन्न में दोष है, गावत वेद सु संत॥
भोग लगावे शुद्ध सब, फल जस सुगति सुअंत॥
तौन अन्न रस स्वाद कर, मिलि रसिकन के संग।
जौन सिया रघुराज के, अधर स्वाद सन रंग॥
तुच कर फल गुरु संत पद, हिय में लेव लगाय।

गाँठ प्रेम प्रण नेम को, शीलमणी सुख दाय ॥
कर के फल सेवा सदा, झाड़ू आदि विधान ।
पूजन गर हरि संत पद, शीलमणी परमान ॥
सकल वेद वेदान्त में, मुनिवर कहत विचार ।
जीवन फल भल शीलमणी, पायो नर तनु धार॥
चरणन को फल दरस को, प्रभु के मंदिर जाय ।
गुरु संतन फल फूल को, शीलमणी फल पाय ॥
मनको फल मंतव्य है, सीता राम हमार ।
रैन दिवस मुख माधुरी, शीलमणी मन धार ॥
जस जग में सम्बन्ध दृढ, मानि रहा है जीव ।
तस जब मानै शीलमणी, रस सम्बंध अतीव ॥
चित कर फल सुमिरन सदा, एक तार सुकुमार ।
श्याम गौर छवि माधुरी, शीलमणी हिय हार ॥
मिथिला अवध अनूप थल, नित्य केलि सम्बंध ।
शीलमणी दिन रैन चित, चढो रहै परबन्ध ॥
चित्त धरम यह जानिये, बेद विदित परमान ।
शीलमणी अनुमान लखु, पुनि प्रत्यक्ष विधान॥

बुद्धि विचार सुधारना, निश्चय सीता राम ।
फलित महा फल बुद्धि अस, शीलमणी सब जाम॥
मन मधुकर मुष कंज को, दृग चकोर मुख चंद ।
रसना चातक स्वादि मुद, मधु उछिष्ट सुख कंद ॥
लुब्ध नासिका रैन दिन, चरन सरोज सुगंध ।
परि मल मय दम्पति सदा, नख सिख अंग प्रबंध॥
अघ्राती जस सुधा सर, श्रवन शील मणी मीत ।
सीता पति पद अंग धरि, परासि तुचा रुच रीत॥
चरन सरन प्रभु के चलत, परि चरजा हित प्रीत।
कर सरवस कैंकर्य कर, शील मनी चित मीत॥
वानी छवि खानी पगी, शील मणी शुचि नाम ।
उच्चारत उन्मत्त रस, प्रेम पियूष सु राम॥
शुद्ध हेत मल मूत्र करि, शीलमणी मति लीन ।
अहं सखा रघुराज को, रूप सुधा को मीन॥
दरकत तम तर मोह मद, परकत लखि प्रभु शील।
शीलमणी जब स्वाद युत, करत पान छबि नील॥
जीवन प्रेम सजीवन, नैन तनें छबि वित्त ।

सुचि उपकरन सुसंचिये, सब अँग नित्यउचित्त
भूषण है अँग अंग में, स्वाद लेत रुचि राच ।
अति आरत जिय जनम को, लखिपायो धनसाच ॥
भिन्नन छिन जिमि प्राण तन, तिमि रस एक सनेह।
बसहो निरखत माधुरी, नहिं अघात चितदेह ॥
फरकत भुज प्रभु मिलन को, सरकत संशय मूल।
शीलमणी बरखत परा, निरखि जलद सम तूल ॥
चन्दन हो अँग अंक भरि, जनु लपटत गहि नाथ।
शील मणी मन आतुरी, बढ़त चातकी गाथ ॥
किमि बरनौं यह मित्रता, रहस बिचित्र सुराज ।
प्रभु यहि तज तन छनक हूँ, प्रभु बिन यह नहिं भ्राज
दृढ़ मति अति सम्बन्ध में, अहंकार फल सोय ।
शीलमणी सिय लाल में, ममता अतिसै हो ॥
सब इन्द्री निज निज विषय, गहैं अचल इस एक ।
तब जानव निज भाव को, शीलमणी सुविवेक ॥
गहि रसिकन के चरन को, रैहे सेय मन लाय ।
शीलमणी तब पाइये, अस सुख नेह अघाय ॥

वसुधा सरल सुपावनी, आनस डासि पवित्र ।
तापर बैठे मंत्र मय, तन मन में हरि मित्र ॥
बचन जानकी जान मय, रसिकन में नित नेम ।
सब भासन हरि दास में, तिन में प्रेम सु छेम ॥
आस भरोसा जगत की, विषय वासना मान ।
काम क्रोध मद लोभ तजि, बैठि एकान्त सु ध्यान॥
करै पाठ उर सोधिकै, उर सोधन गुर ध्यान ।
गुरु आज्ञा उपदेश पुनि, गुरु महिमा सनमान ।
तन सोधन जल मृत्तिका, बचन सुसत्य उचार ।
सत्य नाम सिय राम पद, सत्य संत उर धार ॥
संग सजाती दरस श्री, मूरति रसना नाम ।
मुख्य पंच सुसील मनि रामायण प्रिय धाम॥

इति श्री स्वामी शीलमणी जी कृत विवेक गुच्छा सम्पूर्णम्

शुभमस्तु मंगलमस्तु